Shodhaamrit, Vol.-1; Issue-2 (July-December) 2024 : Page No.-23-26

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

Online ISSN-3048-9296
Vol.-1; issue-2 (July-Dec.) 2024
Page No- 23–26

©2024 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

श्रीमती कंचन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी, बिहार

Corresponding Author :
श्रीमती कंचन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय, सीतामढ़ी, बिहार

महादेवी वर्मा के काव्यों में विरह वेदना

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल की मीरा कही जाने वाली महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व रहस्यवाद की तरह ही रहस्यमय लगता है। श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद में हुआ था। इनके माता-पिता दोनों ही शिक्षा प्रेमी थें। शिक्षा और साहित्य प्रेम महादेवी जी को विरासत में मिला था। महादेवी जी में काव्य रचना के गुण बचपन से ही विद्यमान थें। उनके काव्यों में मानव की विरह व्यथा और करुणा-प्रेम दोनों ही पशुओं का समावेश दिखाई पड़ता है, परंतु विरह वेदना की आवाज अनायास ही सुनाई देती है। कहना गलत ना होगा कि महादेवी को विरह की वेदना ही ईस्ट है, मिलन नहीं। यह भावना उनके काव्य में दिनानुदिन तीव्र ही होती गई है।

स्वदेशी साहित्य में महादेवी की तुलना प्रायः मीरा से की जाती है। मीरा और महादेवी की तुलना करते हुए डॉ0 भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव' ने लिखा है:- "मीरा के साथ महादेवी की तुलना आजकल बहुत प्रचलित है, परंतु प्रायः आलोचक यह भूल जाते हैं कि मीरा मध्यकाल की एक भक्त है और महादेवी आधुनिक काल की एक कवयित्री। महादेवी विरह की पुजारिन और विरह में ही चिर हैं।"[1] इनके कथन से ज्ञात होता है कि महादेवी के काव्यों में विरह की प्रधानता ही अधिक दिखाई पड़ती है। आधुनिक काल के कवि प्रसाद, निराला और पंत के काव्यों से तुलनात्मक अध्ययन से भी इस बात का पता लगाया जा सकता है:-

"महादेवी की विरहजन्य अथवा करुणाजन्य वेदना के संबंध में मुख्यतः इतनी बातें कही जा सकती है:-

1. वेदना महादेवी के काव्य की भाव-सीमा है।
2. वेदनानुभूति की तीव्रता के कारण महादेवी की कविताओं में उस आध्यात्मिक रचना की प्रचुरता है, जिसमें रोमांटिक अवसाद और रहस्यवादी पीड़ा विद्यमान है।

3. महादेवी के विरह-गीत जहां वेदना प्रवण अनुभूति के कारण अत्यंत रसात्मक हो सके हैं, वहां इनकी दार्शनिक मान्यताएँ अनुभूत विचार-सत्य नहीं बन सकी हैं।
4. विरह ही महादेवी का आराध्य है और कवियित्री में स्वंय उस विरह की आकुलता है। इसलिए इनकी वेदानुभूति बेकली से भरी हुई है।
5. इस तरह विरह और वेदना की बहुलता के कारण हम महादेवी की रचनाओं में एक प्रकार की 'एकांत निष्ठा' पाते हैं।"[2]

ऐसा नहीं की महादेवी की रचनाओं में करुणा का समावेश नहीं है, परंतु वेदना महादेवी के काव्य का अध है और करुणा उसकी इति। इनके काव्य में करुणा और वेदना छायावादी कवियों के वेदनावाद से अलग है। महादेवी के काव्य में मानव-हृदय के दोनों ही भावों के दर्शन होते हैं, किंतु करुणा, प्रेम और अंत में विरह की व्याकुलता और वेदना का फूटना सदृश्य है।

"विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात !
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास,
अश्रु चुनता दिवस इसका; अश्रु गिनती रात;
जीवन विरह का जलजात !
आंसुओं का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल
तरल जल-कण से बने धन-सा क्षणिक मृदुगात;
जीवन विरह का जलजात।"[3]

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि आजीवन मानव के जीवन में दु:ख का होना सत्य है और दु:ख के साथ आँसुओं का समावेश है। आखिर यह दर्द, यह वेदना किसके प्रति है और क्यों है ? यह कम यहीं समाप्त नहीं होता इसके अलावा उनके मुख्य काव्यों:- 'निहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'दीपशिखा', सांध्यगीत, संघिनी इत्यादि सभी रचनाओं में दृष्टव्य है। 'निहार' से स्वप्न मिलन, स्वप्न संयोग या स्वप्न संकेत के प्रमाण मिलते हैं।

"कौन आया था ना जाने
स्वप्न में मुझको जगाने
याद में उन उंगलियों के
हैं मुझे पर युग बिताने !"[4]

'निहार' के इन कथन में स्वप्न में स्पर्श का सुख देने वाली उन उंगलियों की याद में जीवन व्यतीत करने की कल्पना कितनी मधुर है। विरह वेदना के साथ दु:ख और अश्रु भी महादेवी के काव्य का महत्त्वपूर्ण भाग है, जहाँ विरह है, वहाँ दु:खवाद है और जहां दुख है, वहां अश्रु का होना स्वभाविक हो जाता है। महादेवी को दु:ख बहुत प्रिय है, इनके लिए दु:ख जीवन का एक ऐसा भाव है जो जीवनपर्यन्त बना रहता है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य करता है। दु:ख और अश्रु मानव मन को अत्यंत कोमल और सहृदय बना देता है। इनके काव्य में दु:खवाद पर बौद्ध-दर्शन का प्रभाव है। बौद्ध-दर्शन ने महादेवी को बहुत प्रभावित किया है। वह दु:ख से इतनी प्रभावित है कि वे अपने आराध्य को ही दुख का प्रतिरुप मान लेती हैं:-

"तुम दु:ख बन इस पथ से आना
शुलों में मित मृदु पटल-सा
खिलने देना मेरा जीवन;
क्या हर बनेगा वह जिसने
सिखा न हृदय को बिंधवाना।"[5]

इस संबंध में डॉ0 कुमार विमल लिखते हैं:- "दु:ख महादेवी को बहुत प्रिय है, क्योंकि इनके लिए दु:ख जीवन का सबसे सुंदर काव्य है। ऐसा काव्य जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी ना पहुंच सके, किंतु हमारा एक बूंद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।"[6] दुख के साथ अश्रु का होना स्वाभाविक है। महादेवी के काव्यों में दु:ख के क्षण में अश्रु की उपस्थिति भी दर्शायी गई है। उनके अश्रु भले ही ऊहात्मक हो, किंतु अविश्वसनीय नहीं है। इन आंसुओं ने महादेवी को छायावादी वेदना की साम्राज्ञी का पद दिया है:-

"सब आंखों के आंसू उजले
सबके सपनों में सत्य पला
जिसने उसको ज्वाला सौंपी
उसने इसमें मकरन्द भरा,
आलोक लुटाता वह घुल-घुल
देता झर सौरभ बिखरा

जलते-खिलते बढ़ते जग में घुलमिल एकाकी प्राण चला
सपने-सपने में सत्य ढला।"[7]

महादेवी जी ने अपने काव्य ग्रंथों का जो नामकरण किया है उसमें एक क्रम है और भाव की दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त कहा जा सकता है। उनके काव्य की क्रमबद्धता स्वप्न, मिलन, इंतजार और फिर विरह की वेदना तक पहुँचती है। 'दीपशिखा' में सबसे अधिक रचनाएँ दीपक के जलने से सम्बन्धित है। दीपक का जलना काव्य में इंतजार और विरह दोनों का प्रतीक है।

"मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिफल
प्रियतम का पथ आलोकित कर
सौरभ फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम-सा घुला मृदु-तक।
देव प्रकाश का सिन्धु अपरिमित
तेरे जीवन का अणु गल-गल
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल।"[8]

कला की दृष्टि से महादेवी का काव्य सांकेतिक है। उन्होंने अपनी बातों को संकेतों के माध्यम से कहने का प्रयत्न किया है। छायावाद के कवि होने के बाद भी इनका काव्य छायावादी कवियों से अलग प्रतीत होता है। प्राकृतिक माध्यमों का सहारा लेते हुए, वे अपने दु:ख और विरह को सामने लाने में सफल होती है। "मैं नीर-भरी दु:ख की बदली" में वे स्वयं की वेदना को बादल से जोड़कर दर्शाती हैं:-

"मैं नीर-भरी दु:ख की बदली !
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा;
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक-से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !"[9]

अनायास ही उनके काव्यों में दु:ख और विरह के भाव के दर्शन हो जाते हैं। महादेवी को कष्ट और दु:ख इसलिए भी प्रिय लगते हैं कि दुख में व्यक्ति में अतृप्ति और अभाव रहता है। इस अभाव के कारण व्यक्ति में कुछ पाने की इच्छा सदैव बनी रहती है। महादेवी को दु:ख और सुख दोनों प्रिय है, परंतु उनके अनुसार दु:ख की अनुभूति मां का परिष्कार और हृदय का विस्तार करती है। उनके अनुसार दु:ख के तड़प के बाद सुख के आनंद का अनुभव कई गुना बढ़ जाता है और उन्हें विश्वास है कि आज का विषाद कभी सुख में बदल ही जायेगा। वे लिखती हैं:- "जिस प्रकार जीवन के उषाकल में मेरे सुखों का उपहास-सा करती हुई विश्व के कण-कण से एक करुणा की धारा उमड़ पड़ी है, उसी प्रकार संध्याकाल में जब लंबी यात्रा से थका हुआ जीवन अपने ही भार से दबाकर कातर-क्रन्दन कर उठेगा, तब विश्व के कोने-कोने में एक अज्ञात पूर्व सुख मुस्कुरा उठेगा।"[10] इस वाक्य की सार्थकता उनकी रचना 'नीरजा' में सार्थक होती प्रतीत होती है। इसके माध्यम से वे दु:ख के साथ सुख का भी अनुभव कर लेती हैं। उनकी काव्य रचना 'निहार' से 'दीपशिखा' तक में दुख और वेदना की अनुभूतियों के दर्शन प्राप्त होते हैं। उनके काव्यों में विरह की घड़ी में मिलन और सुख का सांकेतिक भाव मिलता है। जहाँ वेदना के बाद आनंद का संकेत भी मिल जाता है और उसकी पीड़ा सुख में बदल जाती है। उनका यह भाव 'सांध्यगीत' में दिखाई पड़ता है और उनमें उन्हें विरह की घड़ियां भी मधुर-मधु की यामिनी सी लगती है:- "विरह की घड़ियाँ हुई अलि, मधुर-मधु की यामिनी-सी"[11] महादेवी वर्मा के दु:खवाद की एक अन्य विशेषता यह है कि इन्होंने दु:ख अथवा विषाद को भी आनंद की तरह स्थायी या सत्य मान लिया है। महादेवीजी के अनुसार- "आदिम युग से आज तक मनुष्य अपने हृदय और बुद्धि का परिष्कार करता आ रहा है; पर इस क्रम में किसी भी बिंदु पर उसकी मानसिक तथा बौद्धिक वृत्ति का तारतम्य में नहीं टूटा। किसी भी युग में मनुष्य जीवन की धोई-पोंछी स्लेट पर अपने अनुभवों की वर्णमाला नहीं आरंभ करता। मनुष्य के आंसू, हँसी के कारण भिन्न हो सकते हैं; परंतु उनके मूल तत्व विषाद एक ही रहेंगे।"[12] इस तरह महादेवी दु:ख अथवा विषाद को भी आनंद की तरह चिर स्थायी मानती है।

निष्कर्ष:-

उपयुक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा के कवियों का जो मूल

भाव है, वह पीड़ा ही है। ऐसा नहीं कि उनके काव्यों में अन्य भाव नहीं हैं, परंतु दुःख और अश्रु की अधिकता ज्यादा है, जो पाठक को किसी न किसी दर्द का एहसास कर ही देते हैं। वह दर्द प्रेम, करुणा, इंतजार, स्वप्न मिलन और विरह का हो सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि महादेवी जी के काव्य में विरह की वेदना के स्वर सर्वत्र विद्यमान हैं। महादेवी जी के काव्यों में अंतर्निहित वेदना के तत्व बहुत कुछ उनकी जीवनानुभूति परिणति है। विरह और वेदना के साथ कवियित्री का गहरा अंतर्संबंध है।

संदर्भ सूची:-

1. महादेवी का काव्य सौष्ठव- डॉक्टर कुमार विमल, अनुपम प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-16.
2. महादेवी का काव्य सौष्ठव- डॉक्टर कुमार विमल, अनुपम प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-202.
3. महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-170.
4. महादेवी चिंतन और कला- इंद्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-145.
5. महादेवी चिंतन और कला- इंद्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-156.
6. महादेवी का काव्य सौष्ठव- डॉक्टर कुमार विमल, अनुपम प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-156.
7. महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-207.
8. महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-173.
9. महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-110.
10. महादेवी चिंतन और कला- इंद्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-64.
11. महादेवी चिंतन और कला- इंद्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-65.
12. महादेवी चिंतन और कला- इंद्रनाथ मदान, राधा कृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-160

•